काशी मरणान्मुक्ति : एक उत्तम दार्शनिक उपन्यास

काशीमरणान्मुक्ति : अपने ढंग का एक उत्तम हिन्दी-गद्यकाव्य है। इसमें पूर्वार्ध एवम् उत्तरार्ध रूप में दो भाग हैं। 69 अध्यायों में विभक्त इस दार्शनिक उपन्यास में 49 अध्याय तक पूर्वार्ध भाग है, शेष उत्तरार्ध है। प्रत्येक अध्याय का रहस्य उसके आरंभ में बहुत ही सधी भाषा में स्पष्ट किया गया है।

इस गद्यकाव्य की भाषा प्रतिपाद्य अर्थ को रहस्यात्मक शैली में व्यक्त करती है। उत्तम साहित्य के सृजन का श्रेय दोनों सिद्धहस्त लेखकों को जाता है।

काशीमरण से मुक्ति का सिद्धांत अनादि अपौरुषेय ब्राह्मणात्मक वेद का है। 'काशीमरणान्मुक्तिः' यह वाक्य वेदवाक्य रूप में मान्य है। न्यायदर्शन में इसका स्पष्ट उल्लेख वेदवाक्य रूप में ही है।

यह गद्यकाव्य विशेष रूप से इसलिए भी महनीय है कि काशी में मरण से तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के द्वारा मुक्ति अवश्य होती है- यह एक मात्र वेदों पर विश्वास से ही सिद्ध तथ्य पूरी सफलता के साथ इस काव्य में रोचक प्रक्रिया से स्पष्ट किया गया है। इससे जनमानस में वेदों के प्रति दृढ़ आस्था अवश्य जागृत होनी चाहिए।

यह आस्था ही समूचे विश्व विशेष कर भारत के लिए वास्तव में श्रेयस्कर है। इस गद्यकाव्य के पूर्वार्ध में- 'समस्त जीव परस्पर एक हैं, अभिन्न हैं- इस वस्तुस्थिति को स्पष्ट किया गया है साथ ही जीवमात्र का अन्तिम प्राप्तव्य शिव (ब्रह्म) ही है- इसे पुष्ट किया गया है। यहीं आद्य शंकराचार्य द्वारा व्याख्यायित सर्वोत्तम दर्शन 'अद्वैत दर्शन' का प्रथम सोपान है। उत्तरार्ध में जीव-ब्रह्म (शिव) की एकता (अभेद) की ओर इंगित कर यह व्यक्त किया गया है कि जीव-ब्रह्म की एकता का स्वयं को प्रत्यक्ष होना ही 'मुक्ति' है और यह काशीमरण से सुलभ है। यही अद्वैतदर्शन का द्वितीय सोपान (अंतिम लक्ष्य) है। इस तरह यह गद्यकाव्य काशी विश्वनाथ के अवतार आद्य शंकराचार्य के द्वारा प्रचारित अद्वैतदर्शन के सिद्धांत को ही जनमानस में उतारने का श्रेय प्राप्त कर रहा है।

अंत में इस अनुरोध के साथ यशस्वी लेखक द्वय धन्यवाद के पात्र हैं कि इस गद्यकाव्य का शीर्षक 'काशीमरणान्मुक्तिः' यही रखना चाहिए। क्योंकि 'काशीमरणात्' यह एक समस्त पद है तथा 'मुक्ति' इस शब्द के आगे विसर्ग आवश्यक है, तभी यह संस्कृतवाक्य शुद्ध रूप में मान्य होगा शीर्षक शुद्ध भाषा में ही रखना उचित है।

काशी मरणान्मुक्ति : लेखक मनोज ठक्कर, रश्मि छाजेड़, प्रकाशक : शिव के साईं प्रकाशन 95/3 वल्लभ नगर इन्दौर- 452003 : मूल्य : 360 रु. पृष्ठ संख्या : 510

- प्रो. सुधाकर मिश्र